RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
जनवरी
02
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

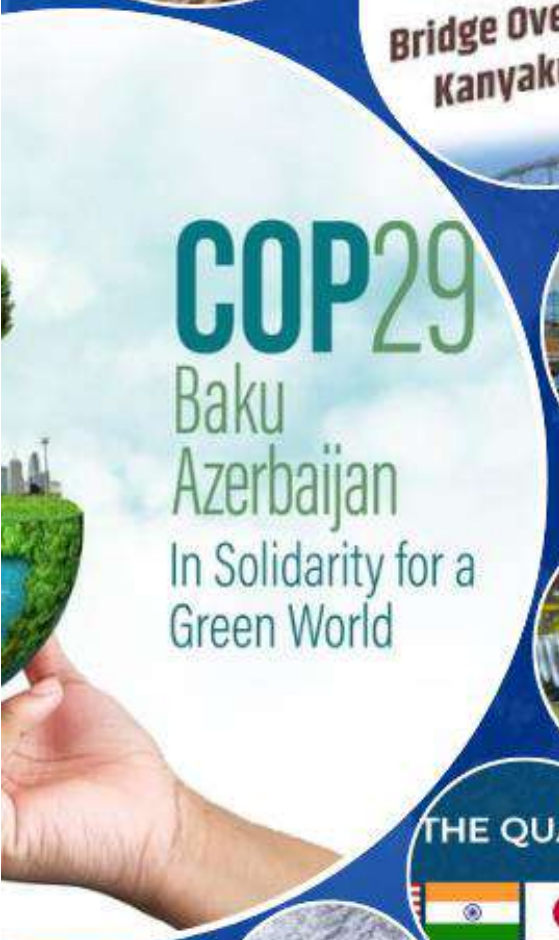

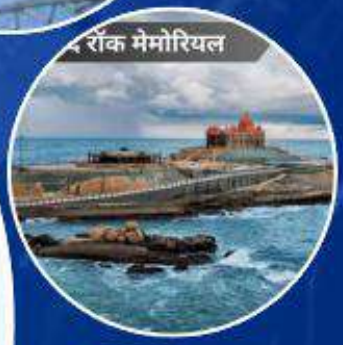

गंभीर प्रकृति की आपदा / Disaster of Severe Nature

इंटर-मंत्रालयी केंद्रीय टीम (IMCT) ने वायनाड में हुए भूस्खलन को 'गंभीर प्रकृति की आपदा' करार दिया है। यह घोषणा क्षेत्र में हुए व्यापक नुकसान और प्रभावित लोगों की दुर्दशा को देखते हुए की गई है।

वायनाड भूस्खलन पर मुख्य बिंदु:

1. **गंभीर प्रकृति की आपदा घोषित**: केंद्र सरकार ने वायनाड में हुए भूस्खलन को 'गंभीर प्रकृति की आपदा' घोषित किया।
2. **भारी जनहानि**: इस भूस्खलन में 254 लोगों की मृत्यु हुई और 128 लोग लापता हैं।
3. **पांच महीने बाद घोषणा**: यह घोषणा घटना के पांच महीने बाद की गई है।

गंभीर प्राकृतिक आपदाएं:

1. **परिभाषा**: गंभीर प्राकृतिक आपदाएं ऐसी विनाशकारी घटनाएं हैं जो बड़े पैमाने पर जीवन, संपत्ति और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती हैं।
2. **प्राकृतिक कारण**: इनमें भूकंप, चक्रवात, या भूस्खलन जैसी प्राकृतिक घटनाएं शामिल होती हैं।
3. **मानव-निर्मित कारण**: औद्योगिक दुर्घटनाएं या अन्य मानव-जनित घटनाएं भी ऐसी आपदाओं का कारण बन सकती हैं।

गंभीर आपदा घोषित होने के प्रभाव:

1. **राष्ट्रीय स्तर पर सहायता**:
   - "दुर्लभ गंभीरता" या "गंभीर प्रकृति" की आपदा घोषित होने पर राज्य सरकार को राष्ट्रीय स्तर पर सहायता दी जाती है।
   - केंद्र सरकार से अतिरिक्त सहायता प्रदान की जाती है, विशेष रूप से राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF) के माध्यम से।
2. **आपदा राहत कोष (CRF)**:
   - केंद्र और राज्य के बीच 3:1 के अनुपात में साझा कोष स्थापित किया जाता है।
   - इस कोष का उपयोग आपदा राहत और पुनर्वास कार्यों के लिए किया जाता है।
3. **अतिरिक्त सहायता**:
   - जब CRF अपर्याप्त होता है, तो राष्ट्रीय आपदा आकस्मिकता कोष (NCCF) से 100% केंद्र वित्तपोषित सहायता प्रदान की जाती है।
4. **ऋण में रियायतें**:
   - प्रभावित लोगों को ऋण पुनर्भुगतान में छूट दी जाती है।
   - नये ऋण रियायती शर्तों पर प्रदान किए जाते हैं।
5. **तेजी से निर्णय प्रक्रिया**:
   - "गंभीर प्रकृति" की घोषणा से प्रभावित क्षेत्रों में राहत और पुनर्वास कार्यों में तेजी लाई जाती है।

आपदाएँ और उनके प्रकार:

आपदाएँ अचानक होने वाली घटनाएँ हैं, जो लोगों और संपत्ति को गंभीर नुकसान पहुंचाती हैं। इन्हें दो प्रकारों में बाँटा जा सकता है – प्राकृतिक और मानव-निर्मित। इनके प्रभाव बड़े या छोटे हो सकते हैं।

आपदाओं के प्रकार:

1. **जल संबंधी आपदाएँ:** बाढ़, ओलावृष्टि, बादल फटना, चक्रवात, हीटवेव, शीतलहर, सूखा और हरिकेन।
2. **भौगोलिक आपदाएँ:** भूस्खलन, भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट और बवंडर।
3. **मानव-निर्मित आपदाएँ:** शहरी और जंगल की आग, तेल रिसाव, और इमारतों का गिरना।
4. **जैविक आपदाएँ:** वायरस के फैलाव, टिड्डी दल हमला, पशु महामारी और कीटों का प्रकोप।
5. **औद्योगिक आपदाएँ:** रासायनिक दुर्घटनाएँ, खनन में आग और तेल रिसाव।
6. **परमाणु आपदाएँ:** परमाणु संयंत्र हादसे और रेडिएशन से संबंधित बीमारियाँ।

गंभीर प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव:

1. **सामाजिक प्रभाव:**
   - जनहानि और लोगों का विस्थापन।
   - महिलाओं और बच्चों जैसे कमजोर वर्गों पर अधिक असर।
2. **आर्थिक प्रभाव:**
   - सड़क, पुल, बिजली व्यवस्था जैसे बुनियादी ढांचे को नुकसान।
3. **पर्यावरणीय प्रभाव:**
   - मिट्टी का कटाव, वनों की कटाई और प्राकृतिक आवास का नष्ट होना।

सरकारी पहल:

1. **आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005:** राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) की स्थापना।
2. **पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986:** पर्यावरणीय क्षरण से जुड़े जोखिमों को कम करने पर ध्यान।
3. **पूर्व चेतावनी प्रणाली:** इंडियन सुनामी अर्ली वार्निंग सिस्टम और डॉपलर रडार का उपयोग।
4. **तत्काल राहत और पुनर्वास:** राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (SDRF) और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF)।

स्वेज नहर विस्तार / Suez Canal Expansion

मिस्र ने स्वेज नहर के नए 10 किलोमीटर लंबे विस्तार का परीक्षण किया है। यह विस्तार जहाजरानी पर जल और वायु धाराओं के प्रभाव को कम करने के साथ-साथ नहर की कुल क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया है।

पृष्ठभूमि: स्वेज नहर विस्तार

परियोजना का उद्देश्य:

- यह परियोजना 2015 में किए गए $8 बिलियन के विस्तार के बाद शुरू हुई।
- नहर की दक्षता में सुधार करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

स्वेज नहर का महत्व:

- मिस्र के लिए यह नहर विदेशी मुद्रा का प्रमुख स्रोत है।
- हाल के वर्षों में राजस्व में 70% तक की गिरावट देखी गई, जो रेड सी में हूती विद्रोहियों द्वारा शिपिंग पर हमलों के कारण हुई।

कार्यक्षमता:

- विस्तार से नौवहन सुरक्षा में सुधार होगा।
- तेज़ हवाओं और रेतीले तूफानों के प्रभाव को कम किया जाएगा।
    - उदाहरण: 2021 में एवर गिवन जहाज स्वेज नहर में फंस गया था, जिससे एक सप्ताह तक व्यापार बाधित रहा।

स्वेज नहर:

- स्वेज नहर पोर्ट सईद (भूमध्य सागर) को सुएज़ शहर (लाल सागर) के माध्यम से भारतीय महासागर से जोड़ती है।
- यह एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय शिपिंग मार्ग है, जो जहाजों को यूरोप और एशिया के बीच अफ्रीकी महाद्वीप को पार किए बिना यात्रा करने की सुविधा प्रदान करता है।

भौगोलिक स्थिति:

- यह नहर मिस्र के उत्तर-पूर्व में स्थित है और सुएज़ के इस्तमुस से होकर गुजरती है।
- नहर की लंबाई लगभग 193 किमी है, जो उत्तर में पोर्ट सईद से लेकर दक्षिण में सुएज़ शहर तक फैली हुई है।
- यह नहर अफ्रीकी महाद्वीप को सीनाई प्रायद्वीप से अलग करती है।

स्वेज नहर का इतिहास:

1. **प्रारंभिक विचार:** इस्तमुस ऑफ सुएज़ के माध्यम से नहर बनाने का विचार प्राचीन काल का है।
2. **निर्माण कार्य:**
    - 1858 में यूनिवर्सल सुएज़ शिप नहर कंपनी को नहर निर्माण का कार्य सौंपा गया।
    - 1869 में 193 किमी लंबी नहर को अंतरराष्ट्रीय नौवहन के लिए खोला गया।
3. **राष्ट्रीयकरण:** 1956 में सुएज़ संकट के दौरान मिस्र ने नहर का राष्ट्रीयकरण किया।
    - 1957 में इसे अंतरराष्ट्रीय नौवहन के लिए पुन: खोला गया।

स्वेज नहर का महत्व:

- यह दुनिया के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले शिपिंग मार्गों में से एक है, जो हर साल लगभग 10 प्रतिशत विश्व व्यापार की मात्रा को संभालता है।
- हर दिन औसतन 50 जहाज इस नहर से गुजरते हैं, जो लगभग 9.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य का सामान लेकर जाते हैं।
- इस मार्ग से जाने वाले माल में कच्चे तेल से लेकर नष्ट होने वाले उत्पादों तक शामिल हैं।
- चीन में बने सामान जो यूरोप के लिए भेजे जाते हैं, वे भी स्वेज नहर से होकर गुजरते हैं, जिससे अफ्रीका के चारों ओर का लंबा मार्ग बच जाता है।

ऊर्जा सुरक्षा के लिए:

- यह नहर खाड़ी देशों (जैसे सऊदी अरब) से यूरोप और उत्तरी अमेरिका तक कच्चे तेल और अन्य हाइड्रोकार्बन के शिपिंग का महत्वपूर्ण मार्ग है।

मिस्र के लिए:

- महामारी से पहले यह मिस्र के GDP में 2% का योगदान करती थी।
- 2022 में नहर से 8 अरब डॉलर का राजस्व अर्जित हुआ।
- 2022 में 23,851 जहाज इस नहर से गुजरे।

भारत के लिए:

- भारत का $200 अरब का व्यापार उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और यूरोप के साथ इस मार्ग से होता है।
- भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए यह नहर महत्वपूर्ण है, खासकर एथेन और कच्चे तेल के आयात के लिए।
- यह भारतीय नौसेना को क्षेत्र में उपस्थिति बनाए रखने और वैश्विक नौसैनिक अभियानों में भाग लेने की सुविधा देती है।

भारत का पहला ग्लास ब्रिज / India's first glass bridge

हाल ही में, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने भारत का पहला कांच का पुल समुद्र पर उद्घाटित किया, जो कांचीमुरी के तिरुवल्लुवर प्रतिमा और विवेकानंद रॉक मेमोरियल को जोड़ता है।

मुख्य बिंदु:

- तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने कांचीमुरी में तिरुवल्लुवर प्रतिमा और विवेकानंद रॉक मेमोरियल को जोड़ने वाले कांच के पुल का उद्घाटन किया।
- इस आयोजन ने तिरुवल्लुवर प्रतिमा की 25वीं वर्षगांठ का जश्न मनाया।
- पुल की लंबाई 77 मीटर और चौड़ाई 10 मीटर है, और इसका निर्माण ₹37 करोड़ की लागत से किया गया।
- **उन्नत निर्माण तकनीकी:** यह पुल समुद्री परिस्थितियों जैसे जंग और तेज हवाओं का सामना करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो इसकी स्थायित्व और सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
- **पर्यटक आकर्षण:** यह पुल एक प्रमुख आकर्षण के रूप में उभरने वाला है, जो पर्यटकों को दो प्रसिद्ध स्मारकों के बीच सुरक्षित और सुंदर मार्ग प्रदान करेगा।
    - पहले समुद्र के ऊंचे ज्वार और उथल-पुथल के कारण यातायात में समस्या थी, जिसे इस पुल ने हल किया है।

थिरुवल्लुवर प्रतिमा के बारे में:

- **स्थान**:
    - कन्याकुमारी, तमिलनाडु में विवेकानंद रॉक मेमोरियल के पास एक चट्टान पर स्थित।
- **राज्य सरकार द्वारा नामकरण**:
    - इसे "ज्ञान की प्रतिमा" नाम दिया गया।
- **ऊँचाई**:
    - कुल ऊँचाई (प्रतिमा + आधार): 133 फीट (41 मीटर)।
    - प्रतिमा की ऊँचाई: 95 फीट (29 मीटर)।
    - आधार की ऊँचाई: 38 फीट (12 मीटर)।
- **वजन**: 7000 टन।
- **डिज़ाइन:**
    - मूर्तिकार वी. गणपति स्थापति द्वारा भारतीय वास्तुकला शैली में बनाई गई।
    - प्रतिमा अंदर से खोखली है।
- **उद्घाटन:** 1 जनवरी 2000 को तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि द्वारा समर्पित।

विवेकानंद रॉक मेमोरियल के बारे में:

- **स्थान:** यह कन्याकुमारी में एक चट्टान पर स्थित है, जो मुख्य भूमि से लगभग 500 मीटर दूर है।
- **इतिहास:**
    - यह 1970 में स्वामी विवेकानंद की श्रद्धांजलि में स्थापित किया गया।
    - स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की आध्यात्मिक धरोहर का प्रतिनिधित्व किया था।
- **महत्व:** यह वही स्थान है जहाँ स्वामी विवेकानंद को ज्ञान प्राप्त हुआ था।
- **धार्मिक महत्व:**
    - यह चट्टान वह स्थान है जहाँ देवी kanyakumari ने भगवान शिव की पूजा की थी।
    - चट्टान पर देवी के पदचिह्न संरक्षित हैं।
- **वास्तुकला:** मेमोरियल में विभिन्न वास्तुकला शैलियों का मिश्रण है, जैसे श्रीपदा मंडपम और विवेकानंद मंडपम।
- **प्रतिमा:** मेमोरियल में स्वामी विवेकानंद की जीवन-आकार कांस्य प्रतिमा स्थित है।
- **सामुद्रिक महत्व:**
    - यह चट्टान लाक्षद्वीप सागर से घिरी हुई है, जहां बंगाल की खाड़ी, भारतीय महासागर और अरबी सागर का संगम होता है।

क्वाड सहयोग की 20वीं वर्षगांठ / 20th anniversary of Quad cooperation

भारत और अन्य क्वाड सदस्य देशों ने एक शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के लिए मिलकर काम करने की अपनी मजबूत प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों ने क्वाड सहयोग की 20वीं वर्षगांठ के मौके पर एक संयुक्त बयान में यह संकल्प लिया।

मुख्य बिंदु:

1. **इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के लिए साझा दृष्टिकोण:**
   - क्वाड देशों का लक्ष्य एक स्वतंत्र, खुला, शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध इंडो-पैसिफिक क्षेत्र बनाना है।
   - यह दृष्टिकोण प्रभावी क्षेत्रीय संस्थाओं द्वारा समर्थित है।
2. **आसियान की केंद्रीय भूमिका:**
   - क्वाड देशों ने आसियान (ASEAN) की केंद्रीयता और एकता के लिए अपने दृढ़ समर्थन की पुष्टि की।
   - आसियान आउटलुक को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में लागू करने और मुख्यधारा में लाने का संकल्प लिया।
3. **क्षेत्रीय संरचनाओं का सम्मान:**
   - प्रशांत क्षेत्रीय संरचनाओं का सम्मान किया गया, विशेष रूप से प्रशांत द्वीप समूहों के मंच (Pacific Islands Forum)।
   - भारतीय महासागर रिम संघ (IORA) के लिए भी समर्थन व्यक्त किया गया।
4. **सामूहिक प्रयासों के माध्यम से विभिन्न चुनौतियों का समाधान:**
   - जलवायु परिवर्तन, कैंसर, महामारी, गुणवत्तापूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर, आतंकवाद विरोधी प्रयासों, महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों, और साइबर सुरक्षा जैसी जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग।
   - क्वाड देशों ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अन्य साझेदारों के साथ मिलकर इन मुद्दों पर काम करने की योजना बनाई।

क्वाड (Quadrilateral Security Dialogue) के बारे में संक्षेप में:

- क्वाड एक रणनीतिक मंच है, जिसमें चार देश शामिल हैं: अमेरिका, जापान, भारत और ऑस्ट्रेलिया।
- इसका उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा और आर्थिक सहयोग बढ़ाना है।
- सदस्य देश स्वतंत्र और खुले इंडो-पैसिफिक को बनाए रखने, लोकतंत्र और मानवाधिकार को बढ़ावा देने और चीन के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए काम करते हैं।
- यह सैन्य गठबंधन नहीं है और अन्य देशों के लिए खुला है जो समान मूल्यों को साझा करते हैं।

क्वाड का महत्व भारत के लिए:

रणनीतिक महत्व:

- क्वाड भारत के लिए एक मंच है, जहाँ इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की साझा चुनौतियों पर चर्चा की जाती है, जैसे चीन का उदय और उसकी बढ़ती आक्रामकता, खासकर 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' सिद्धांत के माध्यम से।

आर्थिक महत्व: क्वाड देशों ने कई पहलों की शुरुआत की है जैसे एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरीडोर, ब्लू डॉट नेटवर्क, और सप्लाई चेन रेजिलिएंस इनिशिएटिव, जो क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए हैं।

- भारत इन पहलों में निवेश प्राप्त करने वाला प्रमुख देश है।

समुद्री सुरक्षा:

- क्वाड भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह संयुक्त नौसैनिक अभ्यास आयोजित करता है और नौवहन की स्वतंत्रता, समुद्री डकैती और अवैध मछली पकड़ने जैसे मुद्दों पर समन्वय करता है।

क्षेत्रीय स्थिरता:

- क्वाड भारत के लिए इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है।
- यह स्वतंत्र, खुला और समावेशी इंडो-पैसिफिक के सिद्धांतों पर आधारित है और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखता है।

क्वाड के चुनौतियाँ:

1. **अस्पष्ट संरचना:** क्वाड में कोई औपचारिक संरचना, सचिवालय या स्थायी निर्णय-निर्माण निकाय नहीं है।
2. **चीन की चिंता:** चीन क्वाड को अपनी वृद्धि को रोकने का प्रयास मानता है, जिससे समूह के लिए चीन के साथ रचनात्मक तरीके से बातचीत करना कठिन होता है।
3. **असंतुलित सहयोग:** सदस्य देशों के पास समान वित्तीय संसाधन, रणनीतिक जागरूकता और सैन्य क्षमताएँ नहीं हैं, जो भविष्य में समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।
4. **सीमित सैन्य क्षमताएँ:** क्वाड के सदस्य देशों की सैन्य क्षमताएँ भिन्न हैं, जिससे आवश्यक होने पर समूह की कार्रवाई सीमित हो सकती है।
5. **घरेलू राजनीति:** घरेलू राजनीतिक कारणों से देशों के बीच सहयोग में सीमाएँ हो सकती हैं, जैसे भारत की घरेलू राजनीति जो उसे अमेरिका के साथ अधिक निकटता से जुड़ने में कठिनाई पैदा कर सकती है।

COP29: जलवायु वित्त समझौता / COP29: Climate Finance Agreement

1991 से जलवायु परिवर्तन वार्ताओं में वित्तीय मुद्दा महत्वपूर्ण रहा है। UNFCCC (1992) में कहा गया कि विकासशील देशों की जलवायु कार्रवाई, विकसित देशों से मिलने वाली वित्तीय और तकनीकी मदद पर निर्भर है।

- बकू में आयोजित 29वीं पार्टियों के सम्मेलन (COP-29) में निर्धारित महत्वाकांक्षी लक्ष्य के बावजूद, इसके परिणामों को खासतौर पर जलवायु वित्त के मामले में संदेह और आलोचना का सामना करना पड़ा है।

जलवायु वित्त का महत्व:

1. **UNFCCC में जलवायु वित्त:** जलवायु वित्त, 1992 में स्थापित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के अंतरराष्ट्रीय समझौतों का एक अहम हिस्सा रहा है।
    - **अनुच्छेद 4(7):** यह अनुच्छेद बताता है कि विकासशील देशों की जलवायु कार्रवाई की प्रतिबद्धताएँ, विकसित देशों द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता और प्रौद्योगिकी पर निर्भर हैं।
2. **पेरिस समझौता: अनुच्छेद 9(1):** इस अनुच्छेद के तहत, विकसित देशों को विकासशील देशों के लिए वित्त जुटाने की जिम्मेदारी दी गई है।
3. **IPCC की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट:**
    - IPCC की छठी रिपोर्ट ने जलवायु कार्यों को लागू करने के लिए वित्त, क्षमता निर्माण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को महत्वपूर्ण कारक बताया है।
    - इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मानवजनित उत्सर्जन ने प्री-इंडस्ट्रियल स्तर से 1.1°C तक तापमान वृद्धि में योगदान किया है।

जलवायु वित्त में चुनौतियाँ:

लक्ष्यों की कमी: विकसित देशों ने 2020 तक विकासशील देशों की जलवायु कार्रवाई के लिए हर साल $100 बिलियन जुटाने का वादा किया था।

- यह लक्ष्य 2022 में जाकर पूरा हुआ, लेकिन यह भी वास्तविक जरूरतों से काफी कम है।

अवास्तविक प्रस्ताव:

- COP29 में नई सामूहिक मात्रात्मक लक्ष्य (NCQG) के तहत 2035 तक $300 बिलियन वार्षिक जुटाने का प्रस्ताव रखा गया।
- जबकि UNFCCC की स्थायी वित्त समिति के अनुसार, वार्षिक आवश्यकता $455 बिलियन-$584 बिलियन है।

कमजोर समूहों के लिए अपर्याप्त आवंटन: छोटे द्वीपीय विकासशील राज्य (SIDS) ने $39 बिलियन और कम विकसित देशों (LDCs) ने $220 बिलियन की मांग की, लेकिन कोई ठोस आवंटन सीमा तय नहीं की गई।

हानि और क्षति की लागत: ग्लोबल स्टॉकटेक (2023) के अनुसार, 2030 तक हानि और क्षति की लागत $447 बिलियन-$894 बिलियन प्रति वर्ष हो सकती है।

- यह मौजूदा वित्तीय प्रतिबद्धताओं और वास्तविक आवश्यकताओं के बीच गहरी खाई को दर्शाता है।

COP 29: जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक सम्मेलन

COP का परिचय: संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) की प्रमुख संचालन संस्था पार्टियों का सम्मेलन (COP) है, जिसकी स्थापना 1992 में हुई। इसके 198 सदस्य (197 देश और यूरोपीय संघ) जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एकजुट हैं। हर साल COP का आयोजन राष्ट्रीय उत्सर्जन डेटा की समीक्षा, प्रगति का आकलन, और वैश्विक जलवायु नीति बनाने के लिए किया जाता है।

COP 29 शिखर सम्मेलन: प्रमुख बिंदु

- **आयोजन स्थल:** बकू, अज़रबैजान।
- **महत्व:** अज़रबैजान ने इस बार वैश्विक जलवायु कार्रवाई में नेतृत्व भूमिका निभाई।
- **मुख्य चर्चा विषय:**
    - जलवायु वित्त जुटाना और वैश्विक स्थिरता प्रयासों का समर्थन करना।
    - नवीकरणीय ऊर्जा में तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देना।
    - जलवायु जोखिमों के लिए वैश्विक अनुकूलन रणनीतियाँ विकसित करना।

COP 29 के उद्देश्य:

1. **जलवायु वित्त:** नई सामूहिक मात्रात्मक लक्ष्य (NCQG) स्थापित करना, विशेषकर विकासशील देशों के जलवायु प्रयासों के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने पर जोर।
2. **शमन और अनुकूलन:** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी लाने के लिए प्रतिबद्धताओं को मजबूत करना।
    - जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए अनुकूलन रणनीतियों को लागू करना।
3. **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना, जिससे वैश्विक शमन और अनुकूलन प्रयासों को समर्थन मिले।
4. **वैश्विक स्टॉकटेक:** पेरिस समझौते के दीर्घकालिक उद्देश्यों की ओर सामूहिक प्रगति का मूल्यांकन।

भारत में पशु कल्याण ढांचा / Animal welfare framework in India

हाल ही में, **वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ़ ज़ूज़ एंड एक्वेरियम्स (WAZA)** ने दिल्ली चिड़ियाघर की सदस्यता छह महीने के लिए निलंबित कर दी है। यह कदम वहां एक अफ्रीकी हाथी के साथ दुर्व्यवहार को लेकर उठाया गया है।

कारण:

WAZA का निर्णय दिल्ली चिड़ियाघर की सदस्यता निलंबित करने का मुख्य कारण अफ्रीकी हाथी शंकर की खराब स्थिति है।

- हाथी का एकांतवास और अतीत में की गई जंजीरों में बंदीकरण WAZA के नैतिक मानकों का उल्लंघन करते हैं।
- इन मानकों में जानवरों के प्रति सम्मानजनक और गरिमामयी व्यवहार पर जोर दिया गया है, और खासकर जैसे हाथी जैसे सामाजिक जानवरों के लिए उचित देखभाल और सामाजिक संपर्क की आवश्यकता बताई गई है।

WAZA की पशु कल्याण रणनीति:

WAZA क्या है?

वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ ज़ूज़ एंड एक्वेरियम्स (WAZA) विश्व स्तर पर क्षेत्रीय संगठनों, राष्ट्रीय महासंघों, चिड़ियाघरों और एक्वेरियम्स का गठबंधन है, जो जानवरों और उनके आवासों की देखभाल और संरक्षण के लिए समर्पित है।

प्रमुख उद्देश्य:

1. चिड़ियाघरों और एक्वेरियम्स का मार्गदर्शन करना और पशु कल्याण सुनिश्चित करना।
2. पशु देखभाल और संरक्षण में वैज्ञानिक आधार पर ज्ञान का उपयोग।
3. पर्यावरण शिक्षा और वैश्विक संरक्षण को बढ़ावा देना।

पांच क्षेत्रों पर आधारित पशु कल्याण मॉडल:

यह ढांचा पशु कल्याण का आकलन और सुधार करने के लिए डिजाइन किया गया है।

1. **पोषण:** जानवरों को संतुलित आहार और स्वच्छ पानी की उपलब्धता।
2. **पर्यावरण:** ऐसा जीवन-पर्यावरण प्रदान करना जो जानवरों को प्राकृतिक व्यवहार व्यक्त करने का मौका दे।
3. **स्वास्थ्य:** बीमारियों और चोटों को रोकने और उनका इलाज करने की व्यवस्था।
4. **व्यवहार:** जानवरों को सकारात्मक सामाजिक संपर्क और प्राकृतिक व्यवहार व्यक्त करने का अवसर।
5. **मानसिक स्थिति:** जानवरों की भावनात्मक आवश्यकताओं का ध्यान रखना, जैसे सकारात्मक अनुभव (उत्साह, संतोष)।

केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (CZA) का भूमिका:

स्थापना: 1992 में वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय।

उद्देश्य:

- भारतीय चिड़ियाघरों को अंतरराष्ट्रीय मानकों तक लाना।
- राष्ट्रीय चिड़ियाघर नीति, 1998 के अनुसार वन्यजीव संरक्षण में राष्ट्रीय प्रयासों को पूरा करना।

भारत में चिड़ियाघर प्रबंधन के मुद्दे:

1. **इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी:** जानवरों की अलग-अलग आवश्यकताओं के लिए सुरक्षा और मनोरंजन सुविधाओं की कमी।
2. **खराब जीवन स्थिति:** कई चिड़ियाघरों में रखरखाव की कमी, जिससे जानवरों और आगंतुकों के लिए असुरक्षित और अस्वास्थ्यकर स्थिति बनती है।
3. **कर्मचारी की कमी:** अधिकांश चिड़ियाघरों में चिकित्सक, जीवविज्ञानी और शिक्षक की कमी, जिससे जानवरों की देखभाल करना कठिन होता है।
4. **नियमों की अवहेलना:** वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत चिड़ियाघरों और CZA द्वारा संरक्षण प्रावधानों की उपेक्षा।
5. **CZA की लापरवाही:** चिड़ियाघरों के लिए वैश्विक मानकों के अनुरूप अद्यतन दिशानिर्देशों की कमी और उनका पालन न करना।
6. **जवाबदेही की कमी:** CZA के कर्तव्यों की उपेक्षा पर कोई सजा या परिणाम नहीं निर्धारित हैं।

पशु क्रूटनीति के मुद्दे:

1. **पशु कल्याण की उपेक्षा:** पशुओं के कल्याण को नजरअंदाज करते हुए केवल दोस्ती का प्रतीक बनाने के लिए उनका आदान-प्रदान।
2. **आवास में बदलाव:** जंगली जानवरों को उनके झुंड से अलग किया जाता है, जिससे उन्हें नए वातावरण में ढलने में कठिनाई होती है।
3. **अनुकूलन की समस्याएँ:** नए मौसम, बंदी स्थिति, और नए देखभालकर्ताओं के साथ तालमेल बैठाना कठिन होता है।
4. **मानसिक चुनौतियाँ:** जानवरों को मानसिक और शारीरिक आघात लगता है, जिससे वे आक्रामक हो सकते हैं और उन्हें क्रूरता या उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।
5. **भाषा की बाधाएँ:** अक्सर जानवरों को एक नई भाषा में प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे नए देश में संघर्ष करते हैं।

भारत में पशु कल्याण उपाय:

1. **संवैधानिक कर्तव्य:** संविधान के अनुच्छेद 48A के तहत राज्य को पर्यावरण की रक्षा और वन्यजीवों का संरक्षण करना अनिवार्य है।
2. **पशुओं के प्रति क्रूरता रोकथाम अधिनियम, 1960:** पशुओं को बिना कारण कष्ट देने से रोकने के लिए।
3. **पशु कल्याण बोर्ड भारत:** 1962 में स्थापित, यह पशु कल्याण कानूनों के लिए एक सलाहकार निकाय है।
4. **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972:** पौधों और जानवरों की प्रजातियों की रक्षा के लिए।
5. **भारतीय दंड संहिता (IPC), 1860:** पशुओं के प्रति क्रूरता की सजा, जैसे हत्या, ज़हर देना या जानवरों को नुकसान पहुंचाना।

काला सागर तट पर तेल प्रदूषण / Oil Pollution along Black Sea Coast

केर्च जलडमरूमध्य के पास तूफान से क्षतिग्रस्त तेल टैंकरों के कारण तेल का रिसाव हुआ, जिससे हजारों टन भारी ईंधन तेल, जिसे माजुत कहा जाता है, समुद्र में फैल गया।

तेल रिसाव (Oil Spill):

1. **परिभाषा:**
    - तेल रिसाव वह अनियंत्रित स्थिति है जब कच्चा तेल, गैसोलीन, या अन्य तेल उत्पाद पर्यावरण में फैल जाते हैं।
    - यह मुख्य रूप से महासागरों को प्रभावित करता है।

तेल प्रदूषण (Oil Pollution):

1. **तेल रिसाव के स्रोत:**
    - **दुर्घटनावश और जानबूझकर:**
        - तेल रिसाव जहाजों, विशेष रूप से टैंकरों, से हो सकता है।
        - ऑफशोर प्लेटफॉर्मों और पाइपलाइनों से भी रिसाव हो सकता है।
    - **प्राकृतिक रिसाव:**
        - समुद्र में प्राकृतिक रूप से तेल रिसाव हो सकता है।
    - **भूमि आधारित स्रोत:**
        - अप्रसंस्कृत मल, वर्षा का पानी, नदियाँ, तटीय रिफाइनरी, तेल भंडारण सुविधाएँ आदि से भी तेल प्रदूषण हो सकता है।

तेल रिसाव के स्रोत (Sources of Oil Spills):

1. **टैंकर, बार्ज, और अन्य जहाजों के दुर्घटनाएँ:** टैंकरों, बार्जों और अन्य जहाजों की टक्करों, समुद्र में फंसने या उपकरणों के खराब होने से तेल का रिसाव हो सकता है।
2. **ऑफशोर तेल संचालन:** ड्रिलिंग रिग्स, पाइपलाइनों और उत्पादन प्लेटफार्मों में रिसाव या ब्लॉउट्स हो सकते हैं, जिससे तेल का रिसाव होता है।
3. **पाइपलाइन:** पाइपलाइनों में क्षरण, भूतत्वीय हलचल, या निर्माण दुर्घटनाओं के कारण तेल का रिसाव हो सकता है।
4. **रिफाइनरी और भंडारण सुविधाएँ:** उपकरणों की विफलता, लीक, और भंडारण या परिवहन के दौरान रिसाव हो सकते हैं।
5. **प्राकृतिक आपदाएँ:** तूफान, चक्रवात, और भूकंप तेल संरचना को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे रिसाव हो सकता है।
6. **मानव त्रुटियाँ:** तेल स्थानांतरण, रख-रखाव, या अन्य गतिविधियों के दौरान गलतियाँ तेल के रिसाव में योगदान कर सकती हैं।

तेल प्रदूषण के प्रभाव (Impact of Oil Pollution):

समुद्री स्तनधारी (Marine Mammals):

- तेल के संपर्क में आने से जहर, हाइपोथर्मिया (शरीर का तापमान गिरना), और श्वसन तंत्र को नुकसान हो सकता है।
- तेल को निगलने या सांस के द्वारा तेल के कणों को ग्रहण करने से यह समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

कोरल रीफ्स (Coral Reefs):

- तेल कोरल पर चिपककर उसकी वृद्धि को रोकता है, जिससे प्रकाश संश्लेषण (photosynthesis) की प्रक्रिया में कमी आती है और अंतत: कोरल मर जाते हैं।

मैंग्रोव और दलदल (Mangroves and Marshes):

- तेल जड़ों और तनों पर चिपककर श्वसन प्रक्रिया में बाधा डालता है, जिससे पौधों की सांस रुक जाती है और वे मर जाते हैं।

मछली पालन क्षेत्र (Fisheries Sector):

- तेल प्रदूषण मछलियों के भंडार को प्रभावित करता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र और मछली पकड़ने पर निर्भर आजीविका पर असर पड़ता है।

स्वास्थ्य जोखिम (Health Risks):

तेल के सीधे संपर्क से:

- त्वचा पर जलन, जलने, और एलर्जी प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं।

विषाक्त धुंआ का श्वसन से:

- श्वसन तंत्र को नुकसान पहुँचता है, जिससे सांस लेने में कठिनाई और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

तेल प्रदूषण पर कानून और अंतरराष्ट्रीय (International):

1. **अंतरराष्ट्रीय (International):**
    - अंतरराष्ट्रीय जहाजों से प्रदूषण रोकथाम संधि 1978
    - OPRC (तेल प्रदूषण तैयारी, प्रतिक्रिया और सहयोग) 1990
    - अंतरराष्ट्रीय नागरिक उत्तरदायित्व 1992
2. **राष्ट्रीय (National):**
    - व्यापारिक शिपिंग अधिनियम, 1958
    - पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986
    - राष्ट्रीय तेल रिसाव आपदा योजना

भारत की सीमाओं में बढ़ता जीपीएस हस्तक्षेप / Rising GPS Interference Near India's Borders

वैश्विक स्तर पर जीपीएस हस्तक्षेप, जिसमें स्पूफिंग हमले भी शामिल हैं, के मामले बढ़ गए हैं, खासकर भारत की पाकिस्तान और म्यांमार सीमा के पास। इससे विमानन सुरक्षा को गंभीर खतरा होता है, क्योंकि इससे नेविगेशन की सटीकता और उड़ान संचालन प्रभावित हो सकते हैं।

GPS हस्तक्षेप और स्पूफिंग:

1. **GPS हस्तक्षेप:**
   - नेविगेशन के लिए उपयोग किए जाने वाले GPS संकेतों की सटीकता में विघटन।
2. **स्पूफिंग:**
   - एक साइबर हमला, जिसमें झूठे GPS संकेत भेजे जाते हैं ताकि नेविगेशन सिस्टम को गुमराह किया जा सके।
   - हमलावर वास्तविक GPS संकेतों की नकल करता है, जिससे सिस्टम गलत स्थान, गति या ऊंचाई का अनुमान लगाता है।
3. **प्रभाव:**
   - विमानों और ड्रोन के लिए नेविगेशन की सटीकता में विघटन।
   - गलत गति या भू-भाग चेतावनियाँ उत्पन्न होती हैं।
   - आधुनिक युद्ध और संघर्ष क्षेत्रों में शत्रुओं को गुमराह करने के लिए उपयोग किया जाता है।
4. **प्रभावित क्षेत्रों के उदाहरण:**
   - भारत-पाकिस्तान और भारत-म्यांमार सीमाओं पर अक्सर घटनाएँ।
   - अज़रबैजान एयरलाइंस दुर्घटना में योगदान।
5. **नए हॉटस्पॉट (2023 से):**
   - उत्तरी इराक (बगदाद क्षेत्र)।
   - काला सागर क्षेत्र।
   - पश्चिमी रूस और बाल्टिक क्षेत्र।
   - उत्तर और दक्षिण कोरिया सीमा क्षेत्र।
   - भारत-पाकिस्तान और भारत-म्यांमार सीमाएँ।

इनर्शियल रेफरेंस सिस्टम (IRS):

- **परिभाषा:**
  यह एक स्वतंत्र नेविगेशन सिस्टम है जो GPS जैसे बाहरी संकेतों के बिना स्थिति, गति और उन्मुखीकरण प्रदान करता है।
- **घटक:**
  1. **जाइरोस्कोप:** कोणीय गति मापते हैं।
  2. **एक्सेलरोमीटर:** रैखिक त्वरण को ट्रैक करते हैं।

कार्यप्रणाली:

- जाइरोस्कोप और एक्सेलरोमीटर से प्राप्त डेटा को एकीकृत करके स्थिति की गणना करता है, जो एक ज्ञात प्रारंभिक बिंदु से संबंधित होती है।
- बाहरी संकेतों से स्वतंत्र रूप से काम करता है, जिससे GPS-विरुद्ध वातावरण में विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है।
- अगर GPS विफल हो जाए, तो यह पांच घंटे तक सुरक्षित रूप से कार्य कर सकता है।

महत्व:

- यह नेविगेशन की सटीकता बनाए रखने के लिए एक अतिरिक्त तंत्र के रूप में कार्य करता है।
- GPS जैमिंग या स्पूफिंग हमलों के दौरान विमान की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

हालिया घटनाएँ और प्रभाव:

- **अज़रबैजान एयरलाइंस क्रैश:**
  - 25 दिसंबर 2024 को हुई इस दुर्घटना में 38 लोगों की मृत्यु हुई।
  - इसका कारण GPS हस्तक्षेप से जुड़ा था, जिसमें रूसी वायु रक्षा ऑपरेशन और यूक्रेनी ड्रोन शामिल थे।
- **GPS स्पूफिंग की वृद्धि:** जनवरी 2024 में प्रतिदिन 300 घटनाएँ दर्ज की गईं, जो अगस्त 2024 तक बढ़कर 1,500 हो गईं।

प्रभावित क्षेत्र और रिपोर्टिंग:

- **दिल्ली का एयरस्पेस:**
  - एक महीने में 316 उड़ानें GPS स्पूफिंग से प्रभावित हुईं।
  - अमृतसर और उत्तर भारत से अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों की उड़ानों पर पायलट अक्सर हस्तक्षेप की रिपोर्ट करते हैं।
- **DGCA के निर्देश:** नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) ने एयरलाइंस को सुरक्षा प्रोटोकॉल स्थापित करने का सुझाव दिया है।
  - हालांकि, घटनाओं की रिपोर्टिंग कम है और डेटा का खुलासा नहीं किया गया है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

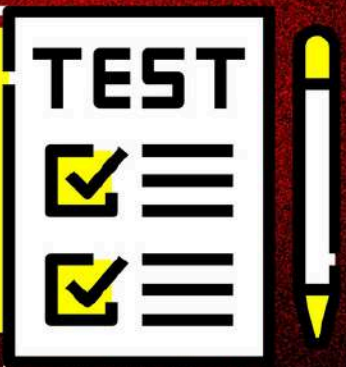

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !